पाढ़र

Stereospermum suaveolens Roxb.DC

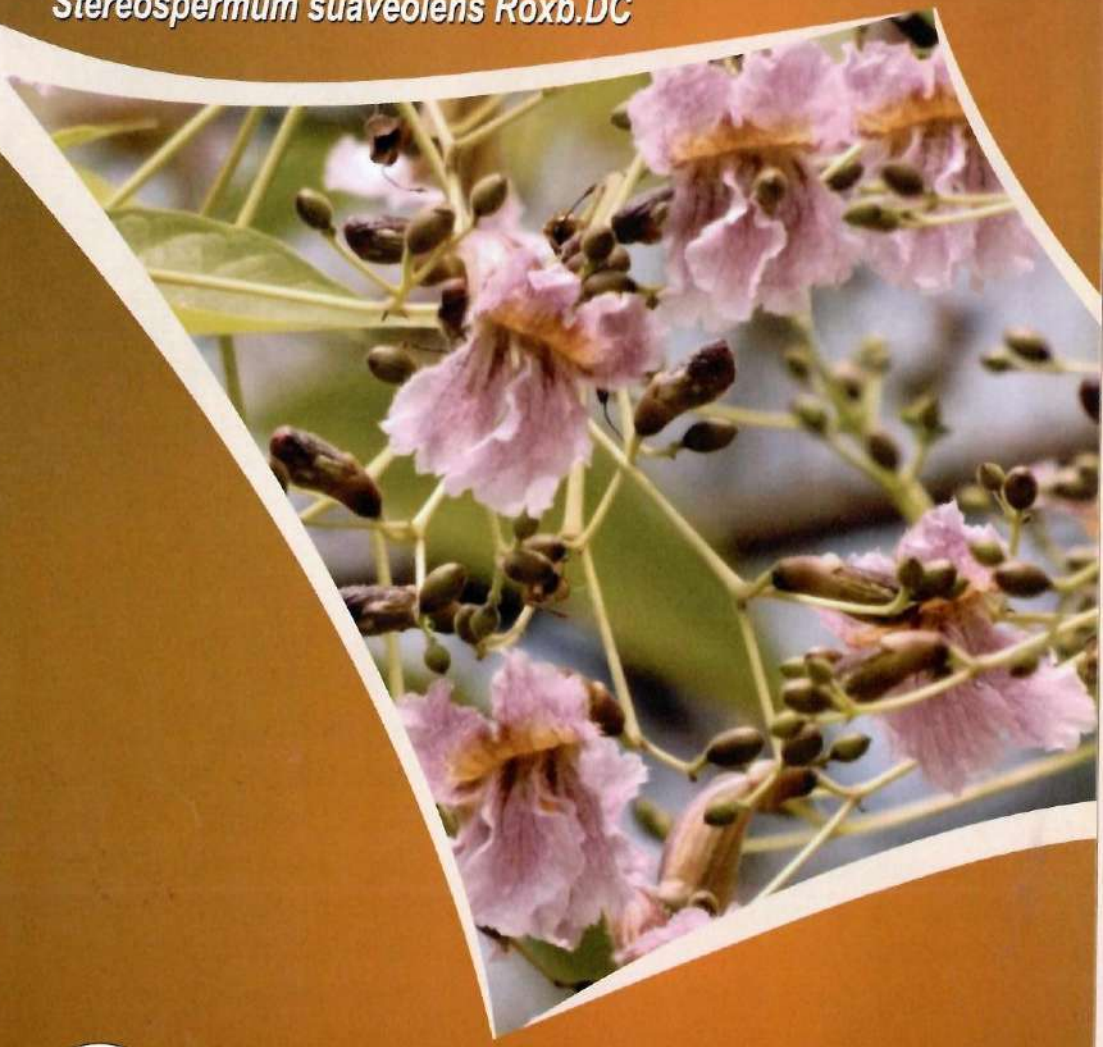

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा
और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

पाढर

Stereospermum suaveolens Roxb.DC

कुल : Bignoniaceae

हिन्दी नाम : पाढर, पाढ़ल, पोडल, पडरिगा, पाडरी

अंग्रेजी नाम : Padize wood, Rose flower fragrant, Fragrant padri tree, Trumpet flower tree, Yellow snake tree

संस्कृत नाम : पाटलि, पाटला, अमोघ, मधुदूत, फलेरूहा, कृष्णवृन्त, कुवेराक्षी, मोक्षक, घण्टापाटलि,अलिवल्लभ, ताम्रपुष्पी, कुम्भीपुष्पी, अम्बुवातिनी, कामदूती, कुम्भिका, कालवृन्तिका, कालस्थालि, काष्ठापाटला

आयुर्वेदिक नामः पाटला

उपयोगी भाग : जड़, छाल, पुष्प, बीज, पत्तियाँ

रासायनिक अवयव

पाढ़र के विभिन्न पादपांगों मे अनेक गुणकारी रासायनिक अवयव पाये जाते हैं। इसके जड़ की छाल में β-sitosterol, n-triacontanol, scutellarein, dehydrotectol; जड़ एव काष्ठ में naphthoquinone lapachol, dehydro-∝ -lapachone, dehydrotectol, oleic acid, palmitic acid, stearic acid, 3- ceryl alcohol; पत्तियों में flavone glycoside, scutellarein, dinatin-7-glucoronide, stereolensin; बीजों में विभिन्न प्रकार के sterols, glycosides, glycoalkaloids, तिक्त पदार्थ एवं अवाष्पीय तैल तथा तने की छाल में iridoid glycoside पाये जाते है, जो उन्हें अनेक औषधीय गुण प्रदान करते है।

गुणधर्म

आयुर्वेद में इसके गुणधर्म निम्नानुसार वर्णित किये गये है।

रस – तिक्त, कषाय ; **गुण** – लघु, रूक्ष ; **वीर्य** – अनुष्ण ; **विपाक** – कटु ; **कर्म** – त्रिदोषहर

पाढ़र त्रिदोष, अर्थात् वात, पित्त एवं कफ को सन्तुलित करता है। इसकी जड़ बहुत ही उपयोगी होती हैं तथा यह 'दशमूल' एवं 'वृहद् पंचमूल' की एक महत्वपूर्ण घटक है। इसके पुष्प मधुर एवं शीतवीर्य होते हैं तथा कफ एवं पित्त की व्याधियों का शमन करते हैं। इसके फल हिचकी एवं रक्तदोष को दूर करते हैं।

यह भोजन के प्रति अरूचि, श्वास (दमा), शोथ (सूजन), वमन, हिचकी, तृषा (अत्यधिक प्यास) तथा शरीर के विभिन्न अंगों मे होने वाली पीड़ा को दूर करता है। इसके अलावा इसमें मूत्रवर्धक (diuretic), हृदय शक्तिवर्धक (cardiac tonic), मस्तिष्क रक्षक (neuroprotective), यकृत रक्षक (hepatoprotective), रक्त शोधक (blood detoxifier), कफ निस्सारक, प्रतिरक्षातंत्र को प्रभावित करने वाले (immunomodulatory), बलवर्धक, कामोद्दीपक, रक्त शर्करा को कम करने वाले एवं स्तनपान कराने वाली माताओं में दुग्धवर्धक गुण भी पाये जाते हैं।

उपयोग

उपरिवर्णित गुणों के कारण इस वृक्ष के विभिन्न पादपांगों, विशेष रूप से इसकी जड़, का उपयोग अनेक रोगों एवं व्याधियों, यथा– मधुमेह, यकृत रोगों, हृदय रोगों, वमन, हिचकी, सूजन, भोजन के प्रति अरूचि, भूख न लगना, दमा, श्वासनली की सूजन (bronchitis), अधिक प्यास लगना (तृषा), सीने मे दर्द, कर्णशूल, नपुंसकता, बांझपन, मानसिक व्याधियों, बबासीर, अपच, अतिसार, जठरशोध (gastritis), पेट के अल्सर, सर्पदंश, विच्छू काटने, ज्वर, माइग्रेन, मूत्र विकार, इत्यादि के उपचार मे किया जाता है।

यह अनेक आयुर्वेदिक औषधि उत्पादों, यथा–दशमूलारिष्ट, धन्वंतरि आसव, धन्वंतरि तैल, अमृतारिष्ट, दशमूल क्वाथ, भारंगी गुड़, इंदुकान्त घृत, इत्यादि का महत्वपूर्ण घटक है।

औषधीय उपयोगों के अलावा इस वृक्ष की काष्ठ का उपयोग इमारती लकड़ी के रूप में किया जाता है।

वितरण

पाढ़र के वृक्ष प्राकृतिक रूप से दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया के विभिन्न देशों के उष्णकटिबंधीय आर्द्रपर्णपाती वनों मे पाये जाते है। भारत मे यह प्रजाति हिमालय की तराई के क्षेत्रों, पूर्वोत्तर मे असम–मेघालय, मध्य भारत, प्रायद्वीपीय भारत, पश्चिमी घाट, कर्नाटक, केरल इत्यादि मे पाई जाती है। इसकी जड़ की बढ़ती हुई माँग की पूर्ति हेतु आजकल इसकी खेती भी विभिन्न राज्यों मे की जा रही है।

आकारिकी

यह सामान्यतया 9 से 18 मीटर लम्बाई का, मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। इसकी छाल धूसर रंग की होती है तथा इसके छिल्के निकलते रहते हैं। इसकी जड़े बेलनाकार, 6–9 से.मी. लम्बी, 1–1.5 से. मी. मोटी, बाहर से भूरे–सफेद रंग की, रूखी, दरारयुक्त तथा अन्दर से गहरे भूरे रंग की रेशायुक्त एवं स्वाद मे कड़वी होती हैं। इसकी शाखायें रोमिल तथा मखमली होती हैं।

इसकी पत्तियाँ 30–60 से.मी. लम्बी तथा यौगिक (compound) होती है। नई पत्तियाँ हल्के बैंगनी रंग की होती है, जो बाद में हरे रंग की हो जाती है। पत्ती मे 3–4 जोड़ी पत्रक (leaflets) होते है। ये छोटे डंठल वाले, दीर्घवृत्ताकार, लम्बे, नुकीले, 7.5 – 16.0 से.मी. लम्बे, 5.0 – 7.5 से.मी. चौड़े, 6–8 नसो वाले तथा मखमली अन्दरूनी सतह वाले होते हैं। ये पत्ती मे विपरीत (opposite) क्रम में तथा विषमपक्षवत (imparipinnate) ढंग से व्यवस्थित होते है। पत्रकों के किनारे (margins) चिकने (smooth) होते है। हाथ से मसलने पर जलन उत्पन्न करते है।

इसके पुष्प द्विलिंगी, हल्के गुलाबी रंग के, रोमिल तथा सुगंधित होते है जो नीचे की ओर लटकती हुई पुष्प मंजरियों (drooping panicles) में व्यवस्थित होते है। पुष्पन सितम्बर से फरवरी तक होता रहता है।

इसकी फलियाँ 30 से 60 से.मी. लम्बी, बेलनाकार, खुरदुरी तथा उभरी धारी युक्त कैप्सूल्स (capsules) होती है। फलियों मे तिकोने (trigonous), लगभग 3 से.मी. लम्बे, बीज होते हैं। एक फली मे 5 बीज तक हो सकते हैं।

जलवायु एवं मृदा

इस प्रजाति के पौधों के लिये $20^{\circ} - 35^{\circ}$ से. तापमान एवं 40 – 50 प्रतिशत आर्द्रता वाली उष्ण–आर्द्र जलवायु उपयुक्त पाई गई है। इसे रेतीली, काली, लेटेरिटिक, दोमट जैसी विभिन्न प्रकार की मृदाओं मे उगाया जा सकता है।

प्रवर्धन सामग्री

बीज से इसके पौधे आसानी से तैयार किये जा सकते हैं तथा बीज ही इसकी सर्वोत्तम प्रवर्धन सामग्री है, यद्यपि कटिंग्स से भी इसकी रोपण सामग्री तैयार की जा सकती है।

नर्सरी तकनीक

परिपक्व फलियों (कैप्सूल्स) का संग्रहण कर उन्हे छाया में एक सप्ताह तक सुखाया जाता है। तत्पश्चात इनसे बीज निकाल कर सीड ब्लोअर द्वारा बीजों मे लगे पंखो को पृथक् कर दिया जाता है। पंखो के पृथक् होने के पश्चात बीजों को तुरन्त पेपर–टॉवेल मे बो देना चाहिए एवं पेपर–टॉवेल को जर्मिनेटर मे 32° से. तापमान पर रख देना चाहिए।

बीजों मे 6 से 20 दिन के अन्दर अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है तथा 8 से 15 दिन मे अंकुरण पूर्ण हो जाता है। पेपर–टॉवेल मे अंकुरण के पश्चात जब पौधों की ऊँचाई 4 से.मी. हो जाये तथा उनमें दो जोड़ी पत्तियाँ निकल आयें, तब उन्हे पोलीथिन थैलियों मे प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। इसके पूर्व पोलीथीन थैलियों में रेत तथा गोबर खाद का 2:1 अनुपात मे मिश्रण भर कर उन्हे तैयार कर लिया जाता है। लगभग 8 महीने तक इन पौधों को नर्सरी मे रखा जाता है। तब तक इनकी ऊँचाई 70 – 80 से.मी. हो जाती है। नर्सरी मे आवश्यकतानुसार झारे से पौधों की सिंचाई करते रहना चाहिए।

क्षेत्र तैयारी

खेत की अच्छी तरह से जुताई कर तथा पाटा चलाकर मिट्टी को भुरभुरी एवं खरपतवार मुक्त कर लेना चाहिए। अंतिम जुताई के समय लगभग 10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर खाद भी मिट्टी में मिला सकते हैं। तत्पश्चात 90 से.मी. x 90 से.मी. अन्तराल पर रोपण हेतु खेत में 30 से. मी. x 30 से.मी. x 30 से.मी. आकार के गड्ढ़े खोद लेना चाहिए।

रोपण

वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में ही तैयार खेत में पहले से खुदे गड्ढ़ों मे नर्सरी मे तैयार पौधों को रोपित कर देना चाहिए।

रखरखाव

रोपण के तुरन्त बाद सिंचाई कर देना चाहिए। तत्पश्चात आवश्यकतानुसार समय–समय पर निंदाई, गुड़ाई एवं सिंचाई करते रहना चाहिए। इस पौधे मे किसी प्रकार के रोग अथवा कीट का प्रयोग नहीं देखा गया है।

विदोहन

रोपण के लगभग 18 माह पश्चात पौधों को उखाड़ कर जड़ों का विदोहन किया जा सकता है।

विदोहनोत्तर प्रबन्धन

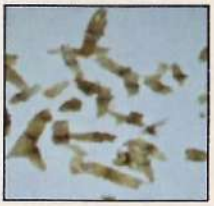

विदोहित जड़ों को साफ कर उन्हे छायादार स्थान में सुखा लेते है। तत्पश्चात सूखी जड़ों को जूट के बोरो मे भर कर उन्हे भण्डारीकृत किया जा सकता है।

उपज

प्रति हेक्टेयर लगभग 1.5 – 2.0 टन सूखी जड़ प्राप्त हो सकती है।

स्कैन QR कोड

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित पौधों, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्क : 0761–2665540, 9300481678, 9424363455, **फैक्स** : 0761–2661304

ई–मेल : rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब : http://www.rcfccentral.org

Amrit # 8349634350